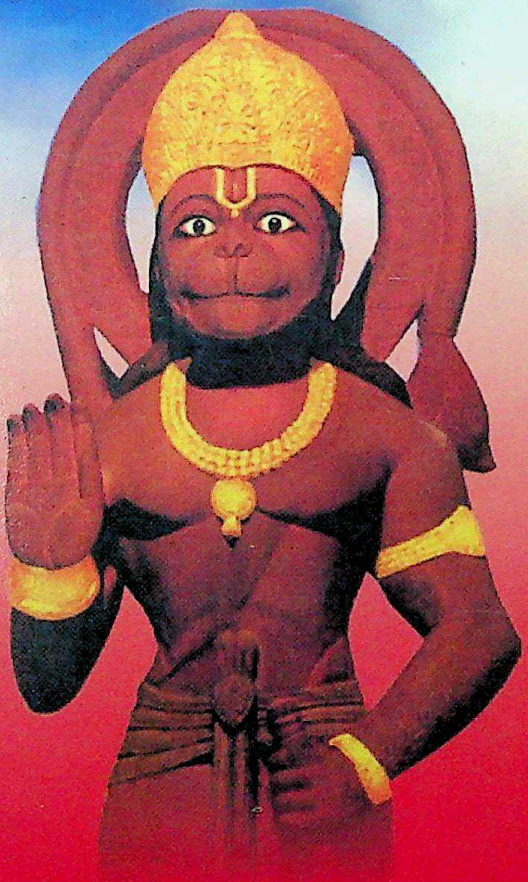
श्रीहनुमानबाहुक



गोस्वामी तुलसीदास

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्रीहनुमानबाहुक

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्रीहनुमानबाहुक

(गोस्वामी तुलसीदासकृत)

भावार्थ

गोपाल ठाकुर

PILGRIMS

पिलग्रिम्स पब्लिशिंग

◆ वाराणसी ◆

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हनुमानबाहुक
गोस्वामी तुलसीदास
भावार्थ—गोपाल ठाकुर

प्रकाशक—
पिलग्रिम्स पब्लिशिंग
पिलग्रिम्स बुक हाउस, वितरक (भारत)
बी० 27/98-ए-8, दुर्गाकुण्ड, वाराणसी-221010
टेलिफोन-(91-542) 2314060, 2312456
ई-मेल-pilgrims@satyam.net.in
वेब साईट-www.pilgrimsbooks.com

पिलग्रिम्स बुक हाउस—
9, नेताजी सुभाष मार्ग, द्वितीय तल (नीरू होटल के पास)
दरियागंज, नई दिल्ली-110002
टेलिफोन-91-11-23285722 फैक्स-91-11-23285081
ई-मेल-pilgrim@del2.vsnl.net.in

पिलग्रिम्स बुक हाउस, वितरक (नेपाल)—
पो० बा० नं०-3872, थामेल, काठमाण्डू, नेपाल
टेलिफोन-(977-1) 4700942, 4700919 फैक्स-(977-1) 4700943
ई-मेल-pilgrims@wlink.com.np

कॉपीराइट © सन् 2005 पिलग्रिम्स पब्लिशिंग

आवरण चित्र—एलिजाबेथ मिलर
साजसज्जा—आशा मिश्रा
अक्षर संयोजन—सुरेश जायसवाल

ISBN—81-7769-350-6

इस पुस्तक का पुन:प्रकाशन, किसी भी प्रकार का आंशिक या पूर्ण प्रकाशन, इलेक्ट्रॉनिक प्रयोग, छायाचित्र का उपयोग आदि, विशेषज्ञ की समीक्षा के अलावा, प्रकाशक की अनुमति के बिना कानून का उल्लंघन है।

मुद्रक—पिलग्रिम प्रेस प्रा० लि०, लालपुर, वाराणसी।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भूमिका

रामभक्त गोस्वामी तुलसीदासजी के बारे में कुछ भी लिखना सूरज को दीपक दिखाने तुल्य कार्य है। क्योंकि वे सम्पूर्ण जीवन पर्यन्त अभाव के दौर में व्यतीत करते हुए राम की स्तुतिगान करते रहे। उन्हें उनके गुरु नरसिंह दासजी से रामकथा का ज्ञान मिला था। वे दासभाव को सर्वोच्च मानते थे। उनका मानना था कि दासभाव से भक्त इष्ट (राम) से भी प्रमुख हो जाता है।

यद्यपि इनके नाम से अनेक कवि हुए हैं। लेकिन संत शिरोमणि संत तुलसीदास जी ने अनेक प्रमाणिक ग्रंथों की रचना की। उनकी अमरकृति रामचरित मानस, कविता वली, गीतावली, रामलला नहछू, बरबैरामायण, जानकी मंगल, रामाज्ञा, वैराग्य संदीपनी, कृष्णगीतावली, पार्वती मंगल, दोहावली और विनय पत्रिका में अंकित संदेश 'काल' को भी आलोकित करता है। रामचरित मानस में

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लिखे गये एक पंक्ति से यह अकाट्य तथ्य प्रमाणित होता है कि 'सुगम अगम मृदु मंजु कठोरे, अरथ अमित अति आखर थोरे।' वे सदैव लोककल्याणकारी कार्यों में सक्रिय रहे। प्रस्तुत हनुमानबाहुक पुस्तिका में उन्होंने अपने ही भोगे हुए सच को अंकित किया है। एक समय उनके बांह में असह्य पीड़ा होने लगी थी। जिससे मुक्त होने के लिये वे औषधि आदि का सहारा लिये। लेकिन दर्द से मुक्ति हनुमानबाहुक के मंत्रों से ही मिली।

आज अनेक हनुमान भक्त इन मंत्रों के पाठ से दर्द मुक्ति का लाभ उठा रहे हैं।

गोपाल ठाकुर
सम्पादक
वाराणसी
सन् २००४

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्रीहनुमानबाहुक

छप्पय

सिंधु-तरन, सिय-सोच-हरन, रबि-बालबरन-तनु।
भुज बिसाल, मूरति कराल कालहुको काल जनु॥
गहन-दहन-निरदहन-लंक निःसंक, बंक-भुव।
जातुधान-बलवान-मान-मद-दवन पवनसुव॥

कह तुलसिदास सेवत सुलभ,
सेवक हित संतत निकट।
गुनगनत, नमत, सुमिरत, जपत,
समन सकल संकट बिकट॥ १॥

भावार्थ—काल के लिये महाकाल, सर्वशक्ति सम्पन्न, सर्वगुण निधान और अजानुबाहु हनुमानजी के शरीर का रंग प्रातःकालीन सूर्य की तरह आभावान है। वे समुद्र

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लांघकर माता जानकी का दु:ख हरने के लिये पहुंच गये। तम (अंधकार) समान लंका नामक भयावह जंगल को इतनी सहजता और सरलता से जला दिये मानों वह बच्चों का खेल हो। साथ ही टेढ़ी भौंहों वाले तथा शक्तिशाली एवं भयानक राक्षसों के अभिमान का नाश किये। संत तुलसीदास जी कहते हैं कि पवनसुत हनुमान की कृपा सुगमता के साथ भक्तों को प्राप्त होती रहती है। उनके आशीर्वाद की छत्रछाया सदैव भक्तों के साथ रहती है। प्रणाम, स्मरण एवं नाम जपने से ही वे भयानक से भयानक संकटों का सर्वनाश कर देते हैं॥ १॥

स्वर्न - सै - संकास कोटि - रबि - तरुन - तेज-घन।
उर बिसाल, भुजदंड चंड नख वज्र बज्रतन॥
पिंग नयन, भृकुटी कराल रसना दसनानन।
कपिस केस, करकस लँगूर, खल-दल-बल-भानन॥

कह तुलसिदास बस जासु
उर मारुतसुत मूरति बिकट।
संताप पाप तेहि पुरुष पहिं
सपनेहुँ नहिं आवत निकट॥ २॥

भावार्थ—हनुमानजी स्वर्ण पर्वत (सुमेरु) के समान तेजवान शरीर के स्वामी हैं। करोड़ों मध्याह्न के सूर्य के

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

समान वे प्रकाशपुंज हैं। उनका विशाल हृदय, बलवान हाथों, वज्र के समान नख, पीला नेत्र, भौंह, जीभ, दाँत और विकराल मुख और वे सर्वशक्तिमान है। शरीर का रंग भूरा और वे कठोर पूँछधारी हैं। तुलसीदासजी कहते हैं कि रामभक्त हनुमानजी का रौद्ररूप जिसके अंतरमन में सदैव बसा रहता है, उस व्यक्ति के पास दुःख और पाप स्वप्न में भी नहीं आता॥ २॥

झूलना

पंचमुख - छमुख - भृगुमुख्य भट - असुर - सुर,
सर्व - सरि - समर समरत्थ सूरो ।
बाँकुरो बीर बिरुदैत बिरुदावली,
बेद बंदी बदत पैजपूरो ॥
जासु गुनगाथ रघुनाथ कह, जासु बल
विपुल - जल - भरित जग - जलधि झूरो।
दुवन - दल - दमनको कौन तुलसीस है
पवनको पूत रजपूत रूरो॥ ३॥

भावार्थ—पंचमुखी भगवान् शंकर, स्वामि कार्तिकेय, परशुराम, दैत्य और देवता लोगों को युद्ध रूपी तामसी नदी से पार जाने के दुष्कर कार्य में हनुमानजी सहायक हैं। वे

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रतिज्ञा को साकार रूप देने वाले कुशाग्रबुद्धि वाले महान् योद्धा हैं। भगवान् रघुनाथ ने स्वयं कहा कि इनके अपार पराक्रम से अपार जल से भरा हुआ समुद्र सूख गया। तुलसी के सुंदर स्वामी पवनसुतजी ही राक्षसों का सर्वनाश करने में एकमात्र सक्षम हैं, दूसरा कोई नहीं॥ ३॥

धनाक्षरी

भानुसों पढ़न हनुमान गये भानु मन
अनुमानि सिसुकेलि कियो फेरफार सो।
पाछिले पगनि गम गगन मगन-मन,
क्रमको न भ्रम, कपि बालक-बिहार सो॥
कौतुक बिलोकि लोकपाल हरि हर विधि
लोचननि चकाचौंधी चित्तनि खभार सो।
बल कैधौं बीररस, धीरज कै, साहस कै,
तुलसी सरीर धरे सबनिको सार सो॥ ४॥

भावार्थ—परम प्रतापी हनुमानजी जब जीवन सूत्र सूर्य के पास विद्याध्ययन के लिये गये तब सूर्य ने यह सोचकर बहाना बना दिया कि मैं स्थिर रहूँगा नहीं और आमने-सामने ही शिक्षा दान संभव होता है। तब हनुमानजी सूर्य की ओर मुख करके पीठ की तरफ पैरों से प्रसन्न मन होकर

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आकाश मार्ग में गमन किये। इसे देखकर इन्द्रादि लोकपाल, विष्णु, रुद्र और ब्रह्माजी को घोर आश्चर्य हुआ। तुलसी-दासजी कहते हैं कि ऐसा बल, ऐसा वीर भाव, असीमित धैर्य, अदम्य साहस तथा समर्पण के संयुक्त रूप से हनुमानजी शरीर धारण किये हैं॥ ४॥

भारतमें पारथके रथकेतु कपिराज,
गाज्यो सुनि कुरुराज दल हलबल भो।
कह्यो द्रोन भीषम समीरसुत महाबीर,
बीर-रस-बारि-निधि जाको बल जल भो॥
बानर सुभाय बालकेलि भूमि भानु लागि,
फलँग फलाँगहूतें घाटि नभतल भो।
नाइ-नाइ माथ जोरि-जोरि हाथ जोधा जोहैं,
हनुमान देखे जगजीवनको फल भो॥ ५॥

भावार्थ—महाभारत के युद्ध में अर्जुन के रथ के पताका से कपिराज हनुमानजी ने ऐसी गर्जना की कि दुर्योधन की सेना भयभीत हो गयी। द्रोणाचार्य और भीष्म पितामह ने कहा कि महाबली हनुमानजी की यह गर्जना है। वीररस रूपी समुद्र का जल ही इनका अपरीमित बल है। बालकों के स्वाभाविक खेल की तरह धरती से सूर्य तक कूदकर

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आकाश मण्डल को एक पग में ही नाप दिये। सभी योद्धा हाथ जोड़ एवं सिर नवाकर उन्हें देखते हैं। इस प्रकार हनुमानजी का दर्शन करने से संसार में जीने का फल इन लोगों को मिल गया॥ ५॥

गोपद पयोधि करि, होलिका ज्यों लाई लंक,
निपट निसंक परपुर गलबल भो।
द्रोन-सो-पहार लियो ख्याल ही उखारि कर,
कंदुक-ज्यों कपिखेल बेल कैसो फल भो॥
संकटसमाज असमंजस भो रामराज,
काज जुग-पूगनिको करतल पल भो।
साहसी समत्थ तुलसीको नाह जाकी बाँह,
लोकपाल पालनको फिर थिर थल भो॥ ६॥

भावार्थ—समुद्र को गोखुर रूप में बनाकर लंका जैसी सुरक्षित नगरी को होलिका की तरह जला डालें, जिससे शत्रु के गढ़ में घबड़ाहट फैल गयी। द्रोण जैसे विशाल पहाड़ को बातों-बातों में उखाड़कर हाथों में उठाकर बेल फल की तरह खेल का सामान बना दिये। रामायण युद्ध के दौरान लक्ष्मण शक्ति से विषम स्थिति पैदा हो गयी और संजीवनी बूटी के लिये पर्वत ही उखाड़ कर लेते आये।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तुलसी के स्वामी सर्व सामर्थ्यवान हैं, जिनकी भुजाओं से लोकपालों का पालन हुआ और पुनः वह स्थान बसाया गया ॥ ६ ॥

कमठकी पीठि जाके गोड़निकी गाड़ै मानो
नापके भाजन भरि जलनिधि-जल भो।
जातुधान-दावन परावन को दुर्ग भयो,
महामीनबास तिमि तोमनिको थल भो॥
कुंभकर्न - रावन - पयोदनाद - ईंधनको
तुलसी प्रताप जाको प्रबल अनल भो।
भीषम कहत मेरे अनुमान हनुमान-
सारिखो त्रिकाल न त्रिलोक महाबल भो॥ ७॥

भावार्थ—जिनके पांव के दवाब से कछुआ के पीठ के सम्य समुद्र में गड्ढा बन गया। वह स्थान बड़े-बड़े मत्स्य के रहने का स्थान बना। साथ ही युद्ध से भागे भगोड़े भी उसी में छिप गये। रावण, कुम्भकर्ण और मेघनादरूपी ईंधन को जलाने के निमित्त जिनके प्रताप से अग्नि प्रचंड हुई। भीष्म पितामह कहते हैं कि तीनों काल एवं लोकों में हनुमानजी की तरह प्रतापी बलवान् कोई हुआ ही नहीं॥ ७॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दूत रामरायको, सपूत पूत पौनको, तू
अंजनीको नंदन प्रताप भूरि भानु सो।
सीय-सोच-समन, दुरित-दोष-दमन,
सरन आये अवन, लखनप्रिय प्रान सो॥
दसमुख दुसह दरिद्र दरिबेको भयो,
प्रकट तिलोक ओक तुलसी निधान सो।
ज्ञान-गुनवान बलवान सेवा सावधान,
साहेब सुजान उर आनु हनुमान सो॥ ८॥

भावार्थ—हनुमानजी भगवान श्रीराम के दूत, पवनदेव के सुयोग्य पुत्र, माता अंजनी को आनन्द प्रदान करने वाले, असंख्य सूर्यो से भी अधिक तेजस्वी, सीताजी के शोक नाशक, शरणागतों के रक्षक और लक्ष्मणजी को प्राणों से भी बढ़ कर प्रिय हैं। तुलसीदासजी के दरिद्ररूपी रावण का नाश करने के लिये हनुमानजी तीनों लोकों में प्रकट हुए हैं। अतः ज्ञानी, गुणवान और भक्तों के कल्याणरूपी सेवा में हर पल तत्पर हनुमानजी को अपने अंतरमन में बसाना सर्व कल्याणकारी है॥ ८॥

दवन-दुवन-दल भुवन-बिदित बल,
बेद जस गावत बिबुध बंदीछोरको।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पाप-ताप-तिमिर तुहिनबिघटन-पटु,
सेवक-सरोरुह सुखद भानु भोरको॥
लोक-परलोकतें बिसोक सपने न सोक,
तुलसी के हिये है भरोसो एक ओरको।
रामको दुलारो दास बामदेवको निवास,
नाम कलि-कामतरु केसरी-किसोरको॥ ९॥

भावार्थ—वेद हनुमानजी का यशगान करता है कि कारागार से देवताओं को छुड़ाने वाले पवनकुमार ही हैं। दानवों का समूल नाश करने में आपका पराक्रम अतुलनीय है। वे पापरूपी अंधकार को दूर करने, सेवकरूपी कमल को प्रसन्न करने के लिये प्रातःकाल के सूर्य के समान आभावान् है। तुलसीदास को हनुमानजी पर पूर्ण विश्वास है। इसी से वे शोकरहित हैं। भगवान् राम के प्रिय पात्र शिवस्वरूप केसरी नन्दन का नाम कलिकाल में कल्पवृक्ष की तरह है॥ ९॥

महाबल-सीम, महाभीम, महाबानइत,
महाबीर बिदित बरायो रघुबीरको।
कुलिस-कठोरतनु जोरपरै रोर रन,
करुना-कलित मन धारमिक धीरको॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दुर्जनको कालसो कराल पाल सज्जनको
सुमिरे हरनहार तुलसीकी पीरको।
सीय-सुखदायक दुलारो रघुनायकको,
सेवक सहायक है साहसी समीरको॥ १०॥

भावार्थ—हनुमानजी श्रीरामचन्द्रजी द्वारा चुने हुए महा पराक्रमी योद्धा हैं। वज्र के समान कठोर शरीरधारी है जिनके जोर करते ही शत्रुदल में कोलाहल मच जाता है। वे सुंदर हैं, करुणामय हैं, धैर्य के प्रतीक हैं तथा धर्माचरण के निर्वाहक हैं। दुष्टों के लिये काल के समान भयावह तथा सज्जनों के पालनहार है। साथ ही स्मरण मात्र से ही तुलसीदासजी के दुःखहर्त्ता हैं। माता जानकी को सुख देने वाले, श्रीरामचन्द्र के दुलारे और भक्तों की सहायता करने में हनुमानजी सहायक हैं॥ १०॥

रचिबेको बिधि जैसे, पालिबेको हरि, हर
मीच मारिबेको, ज्याइबेको सुधापान भो।
धरिबेको धरनि, तरनि तम दलिबेको,
सोखिबे कृसानु, पोषिबेको हिम-भानु भो॥
खल-दुख-दोषिबेको, जन-परितोषिबेको,
माँगिबो मलीनताको मोदक सुदान भो।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आरतकी आरति निवारिबेको तिहूँ पुर,
तुलसीको साहेब हठीलो हनुमान भो॥ ११॥

भावार्थ—हनुमानजी सृष्टि संरचना में ब्रह्मा, विष्णु की तरह पालनकर्त्ता और रुद्र की तरह संहारककर्त्ता हैं। जिलाने के लिये अमृत, पृथ्वी की तरह धारक, अंधकार की समाप्ति के लिये सूर्य, खलों के लिये घातक, सेवकों के लिये संतुष्टि तथा मांगनारूपी मैलेपन के विनाश करने वाले मोदकदाता हैं। तीनों लोकों में दुखियों के सर्व-कल्याण के लिये हनुमानजी दृढ़प्रतिज्ञ हैं॥ ११॥

सेवक स्योकाई जानि जानकीस मानै कानि,
सानुकूल सूलपानि नवै नाथ नाँककी।
देवी देव दानव दयावने ह्वै जोरैं हाथ,
बोपुरे बराक कहा और राजा राँककी॥
जागत सोवत बैठे पागत बिनोद मोद,
ताकै जो अनर्थ सो समर्थ एक आँककी।
सब दिन रूरो परै पूरो जहाँ-तहाँ ताहि,
जाके है भरोसो हिये हनुमान हाँककी॥ १२॥

भावार्थ—भक्त हनुमानजी की सेवा से जानकीनाथ रघुनाथजी आभार से दब गये हैं। शिवजी सदैव इनके पक्ष

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

में रहते हैं और स्वर्ग के स्वामी इन्द्र इनका सदैव सम्मान करते हैं। इनकी कृपा के लिये देवी-देवता और दानव हाथ जोड़ते हैं फिर राजा या दुखी दरिद्रों की क्या औकात है। अत: हनुमान भक्तों का अहित करने की भूल कोई नहीं करेगा। क्योंकि हनुमानजी की हुंकार पर उसे पूर्ण विश्वास है॥ १२॥

सानुग सगौरि सानुकूल सूलपानि ताहि,
लोकपाल सकल लखन राम जानकी।
लोक परलोकको बिसोक सो तिलोक ताहि,
तुलसी तमाइ कहा काहू बीर आनकी॥
केसरीकिसोर बंदीछोरके नेवाजे सब,
कीरति बिमल कपि करुनानिधानकी।
बालक-ज्यों पालिहैं कृपालु मुनि सिद्धताको,
जाके हिये हुलसति हाँक हनुमानकी॥ १३॥

भावार्थ—हनुमानजी के हुंकार से जिसका मन हर्षोल्लास से प्रफुल्लित हो जाता है। भगवान् शंकर सहित पार्वतीजी, रामचंद्रजी, जानकी, लक्ष्मणजी उनसे प्रसन्न रहते हैं। तुलसीदासजी कहते हैं कि तीनों लोकों में अन्य योद्धा पर आश्रित होने की क्या आवश्यकता है। क्योंकि कृपा निधान

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

केशरीनन्दन हनुमानजी तो हैं ही। इनके प्रसन्न होने मात्र से ही सभी सिद्ध मुनि हनुमानजी पर आश्रित होकर प्रसन्न मन से बालक की तरह पालन-पोषण करते हैं। उन करुणानिधान कपीश्वर की कीर्ति निर्मल और निर्विवाद है॥ १३॥

करुना निधान, बलबुद्धिके निधान, मोद-
महिमानिधान, गुन-ज्ञानके निधान हौ।
बामदेव-रूप, भूप रामके सनेही, नाम
लेत देत अर्थ धर्म काम निरबान हौ॥
आपने प्रभाव, सीतानाथके सुभाव सील,
लोक-बेद-बिधिके बिदुष हनुमान हौ।
मनकी, बचनकी, करमकी तिहूँ प्रकार,
तुलसी तिहारो तुम साहेब सुजान हौ॥ १४॥

भावार्थ—हनुमानजी दया के मूल स्थान, बुद्धि बल के धाम, आनन्द महिमा के मन्दिर, गुणज्ञान के पवित्र निकेतन हैं। वे राजा रामचंद्र के स्नेही शंकरजी के रूप का स्मरण और नाम भजने मात्र से ही अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष के दाता हैं। वे अपनी शक्ति से रघुनाथजी के शील स्वभाव, लोक रीति और वेद विधि के पण्डित हैं। तुलसीदास मन, वचन

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और कर्म से आपके दास हैं। आप चतुर स्वामी हैं। आप अंर्तयामी हैं॥ १४॥

मनको अगम, तन सुगम किये कपीस,
काज महाराजके समाज साज साजे हैं।
देव-बंदीछोर रनरोर केसरीकिसोर,
जुग जुग जग तेरे बिरद बिराजे हैं॥
बीर बरजोर, घटि जोर तुलसीकी ओर
सुनि सकुचाने साधु, खलगन गाजे हैं।
बिगरी सँवार अंजनीकुमार कीजे मोहिं,
जैसे होत आये हनुमानके निवाजे हैं॥ १५॥

भावार्थ—हे कपिराज! श्रीरामचन्द्रजी के दुर्गम काम को आपने अपने शरीर से सरलतापूर्वक कर दिये। हे केसरीकिशोर! आपने देवताओं को बंदीखाने से मुक्त कराकर संग्राम भूमि में शत्रुओं में कोलाहल मचाने वाले हैं। आपका यश सर्वत्र व्याप्त है। हे अतुलनीय योद्धा! तुलसी के लिये आपका बल क्यों घट गया। जिसे सुनकर साधुगण सकुचा गये हैं और दुष्ट जन प्रसन्न हो रहे हैं। हे अंजनीपुत्र! मेरी बिगड़ी स्थिति या बिगड़ी बात को उसी तरह सुधार दीजिये जैसे जटिल कार्यों को सरलता से सुधारते आये हैं॥ १५॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सवैया

जानसिरोमनि हौ हनुमान सदा
जनके मन बास तिहारो।
ढारो बिगारो मैं काको कहा केहि
कारन खीझत हौं तो तिहारो॥
साहेब सेवक नाते ते हातो कियो
सो तहाँ तुलसीको न चारो।
दोष सुनाये तें आगेहुँको होशियार
ह्वै हों मन तौ हिय हारो॥ १६॥

भावार्थ—हे हनुमानजी! आप ज्ञान शिरोमणि हैं और सेवकों को आप पर पूर्ण आस्था है। मैंने किसी का क्या बिगाड़ा है। फिर आप किस कारण से अप्रसन्न हैं। मैं तो आपका ही दास हूँ। आपने इस सेवक को भूला दिया है। इसमें मैं कुछ कर भी नहीं सकता। यद्यपि मेरा मन हृदय हार गया है। फिर भी मेरा अपराध बता दीजिये, जिससे मैं संभल जाऊँ॥ १६॥

तेरे थपे उथपै न महेस,
थपै थिरको कपि जे घर घाले।
तेरे निवाजे गरीबनिवाज
बिराजत बैरिनके उर साले॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

संकट सोच सबै तुलसी लिये
नाम फटै मकरीके-से जाले।
बूढ़ भये बलि, मेरिहि बार,
कि हारि परे बहुतै नत पाले॥ १७॥

भावार्थ—हे वानरराज! आपके बसाये हुए आश्रित भक्त-जनों को भगवान् शंकर भी उजाड़ नहीं पाते और जिस घर को आपने उजाड़ दिया है उसे कोई बसा भी नहीं सकता। हे गरीब नवाज! आप जिस पर प्रसन्न हुए उसका कोई बाल बांका भी नहीं कर सकता। तुलसीदास जानते हैं कि आपका नाम लेने से बड़ा से बड़ा संकट भी मकड़ी के जाले की तरह फट जाता है। आपकी बलिहारी है कि आप केवल मेरे लिये ही बूढ़े (निर्बल) हो गये हैं या बहुत से गरीबों का पालन-पोषण करते-करते थक गये हैं? इसीलिये मेरा संकट दूर करने में देर कर रहे हैं॥ १७॥

सिंधु तरे, बड़े बीर दले खल,
जारे हैं लंकसे बंक मवासे।
तैं रन-केहरि केहरिके बिदले
अरि-कुंजर छैल छवा से॥
तोसों समत्थ सुसाहेब सेइ सहै

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तुलसी दुख-दोष दवा से।
बानर-बाज बढ़े खल-खेचर,
लीजत क्यों न लपेटि लवा-से॥ १८॥

भावार्थ—आपने समुद्र को लाँघकर दुष्ट राक्षसों का सर्वनाश किये और लंका जैसे विकट गढ़ को जला दिये। आप जैसे सामर्थ्यवान की सेवा करते हुए तुलसीदास ही क्यों दुःख की आग सह रहे हैं। हे वानररूपी बाज! दुष्टजन रूपी पंक्षी बहुत बढ़ गये हैं। आप क्यों नहीं बटेर की भांति उन दुष्टों को लपेट लेते हैं॥ १८॥

अच्छ - बिमर्दन कानन - भानि
दसानन आनन भा न निहारो।
बारिदनाद अकंपन कुंभकरन्न-
से कुंजर केहरि - बारो॥
राम - प्रताप - हुतासन, कच्छ,
बिपच्छ, समीर समीरदुलारो।
पापतें, सापतें, ताप तिहूँ तें
सदा तुलसी कहँ सो रखवारो॥ १९॥

भावार्थ—हे अक्षयकुमार का वध करनेवाले महाबली हनुमानजी! आपने ही अशोकवाटिका का विध्वंस किया

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और रावण जैसे प्रतापी योद्धा का मुंह देखे तक नहीं, न तो उसका कोई चिन्ता ही किये। आप मेघनाद, अकम्पन और कुम्भकर्ण जैसे हाथियों का अंहकार चूर-चूर कर दिये। भगवान् राम का प्रताप अतुलनीय है। फिर भी आपने ही तिनके की तरह उनके विपक्षियों को नष्ट कर डाला। हे पवननन्दन! तुलसीदास को पाप, शाप और संताप से आप ही बचायेंगे॥ १९॥

धनाक्षरी

जानत जहान हनुमानको निवाज्यौ जन,
मन अनुमानि, बलि, बोल न बिसारिये।
सेवा-जोग तुलसी कबहुँ कहा चूक परी,
साहेब सुभाव कपि साहिबी सँभारिये॥
अपराधी जानि कीजै सासति सहस भाँति,
मोदक मरै जो, ताहि माहुर न मारिये।
साहसी समीरके दुलारे रघुबीरजूके,
बाँह पीर महाबीर बेगि ही निवारिये॥ २०॥

भावार्थ—हे हनुमंत! आप अपनी प्रतिज्ञा को मत भुलाइये। जिसको सम्पूर्ण संसार जानता है। आपका कृपापात्र भक्त बाधारहित और प्रसन्नचित्त रहता है।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हे स्वामी कपिराज! तुलसी कभी सेवा योग्य था? क्या कोई भूल हुई है। अपने बड़प्पन को आप स्वयं ही समझिये। मुझे अपराधी समझते हैं तो मुझे दण्ड दीजिये। किन्तु जो लड्डू देने से मर जाता हो, उसे विष से मत मारिये। हे महाबली, पवन के दुलारे, श्रीरामजी के प्यारे, मेरी भुजाओं की पीड़ा को शीघ्र दूर करें॥ २०॥

बालक बिलोकि, बलि, बारेतें आपनो कियो,
दीनबंधु दया कीन्हीं निरुपाधि न्यारिये।
रावरो भरोसो तुलसीके, रावरोई बल,
आस रावरीयै, दास रावरो बिचारिये॥
बड़ो बिकराल कलि, काको न बिहाल कियो,
माथे पगु बलीको, निहारि सो निवारिये।
केसरीकिसोर, रनरोर, बरजोर बीर,
बाँहुपीर राहुमातु ज्यौं पछारि मारिये॥ २१॥

भावार्थ—हे दीनबन्धु दीनानाथ! आप पर मैं बलि बलि जाता हूँ। इस बालक को बचपन में ही आपने अपनाया है और व्यापक दया की है। सोचिये तो सही, तुलसी आपका दास है। इसको आपका ही भरोसा, आपके ही बल की पूरी आशा है। अत्यंत भयानक कलिकाल ने

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

किसको पीड़ित नहीं किया। आप अपने श्रीचरण को मेरे मस्तक से न हटाइये।

हे केसरीकिशोर! बलशाली, रणविजय, आप रण में कोलाहल पैदा करने वाले हैं। राहू की माता सिंहीका के समान बाहू की पीड़ा से मुझे मुक्त कर दीजिये॥ २१॥

उथपे थपनथिर थपे उथपनहार,
केसरीकुमार बल आपनो सँभारिये।
रामके गुलामनिको कामतरु रामदूत,
मोसे दीन दूबरेको तकिया तिहारिये॥
साहेब समर्थ तोसों तुलसीके माथेपर,
सोऊ अपराध बिनु बीर, बाँधि मारिये।
पोखरी बिसाल बाँहु, बलि बारिचर पीर,
मकरी ज्यौं पकरिकै बदन बिदारिये॥ २२॥

भावार्थ—हे केशरी कुमार! आप उजड़े (सुग्रीव, विभीषण) हुए लोगों को बसाने वाले और बसे हुए (रावण आदि) को उजाड़ने वाले हैं। आप अपने उस बल का स्मरण कीजिये। हे रामदूत! आप श्रीराम के लिये कल्पवृक्ष हैं। अत: मेरे जैसे दीन दुखियों के एकमात्र आप ही सहारा हैं। हे वीरस्वामी! आप सा सामर्थ्यवान स्वामी

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तुलसी के मन मस्तिष्क में विद्यमान है। फिर भी मुझे बांधकर मारा जा रहा है। मेरी भुजा विशाल पोखरी की तरह है। इसमें होने वाली पीड़ा जलचर के समान है। अतः मकरी की तरह इस जलचरी का मुंह फाड़ डालिये॥ २२॥

रामको सनेह, राम साहस लखन सिय,
रामकी भगति, सोच संकट निवारिये।
मुद-मरकट रोग-बारिनिधि हेरि हारे,
जीव-जामवंतको भरोसो तेरो भारिये॥
कूदिये कृपाल तुलसी सुप्रेम-पब्बयतें,
सुथल सुबेल भालु बैठिकै बिचारिये।
महाबीर बाँकुरे बराकी बाँहपीर क्यों न,
लंकिनी ज्यों लातघात ही मरोरि मारिये॥ २३॥

भावार्थ—रामचन्द्रजी के प्रति प्रगाढ़ आस्था-स्नेह भक्ति तथा जानकीजी की कृपा से मुझमें साहस है। अतः मेरे संकट को दूर कीजिये। आनन्दरूपी बंदर, रोगरूपी अपार समुद्र को देखकर हतोत्साहित हो गये हैं। जीव रूपी जामवंत को आपका बड़ा सहारा है।

हे कृपालु! तुलसी के सुंदर प्रेमरूपी पर्वत से कूदिये। श्रेष्ठ स्थान (हृदय) रूपी सुबेल पर्वत पर बैठे जीव

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रूपी जामवंतजी आपका हरपल चिन्तन करते रहते हैं। हे महाबलि बाँके योद्धा! मेरे बाँहों की पीड़ा रूपी लंकिनी को लात के ठोकर से क्यों नहीं मार डालते?॥ २३॥

लोक-परलोकहूँ तिलोक न बिलोकियत,
तोसे समरथ चष चारिहूँ निहारिये।
कर्म, काल, लोकपाल, अग-जग-जीवजाल,
नाथ हाथ सब निज महिमा बिचारिये॥
खास दास रावरो, निवास तेरो तासु उर,
तुलसी सो देव दुखी देखिअत भारिये।
बात तरुमूल बाँहुसूल कपिकच्छु बेलि,
उपजी सकेलि कपिकेलि ही उखारिये॥ २४॥

भावार्थ—हे हनुमान्‌जी! लोक-परलोक, तीनों लोकों में अपनी आंखों से मैं आपको ही देखता हूँ कि आपके समान कोई सुयोग्य नहीं है। हे नाथ! कर्म, काल, लोकपाल तथा सम्पूर्ण स्थावर-जंगम जीव समूह आपके ही कृपा पर आधारित है। अपनी महिमा पर विचार करें। हे देव! तुलसी आपका निजी दास है। उसके हृदय में आपका निवास है। वह दास भारी दुःख से पीड़ित है। वात व्याधिजनित बाँह की पीड़ा केवांच की लता के समान है। उसके जड़ को आप वानरी खेल द्वारा उखाड़ डालिये॥ २४॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करम-कराल-कंस भूमिपालके भरोसे,
बकी बकभगिनी काहूतें कहा डरैगी।
बड़ी बिकराल बालघातिनी न जात कहि,
बाँहुबल बालक छबीले छोटे छरैगी॥
आई है बनाइ वेष आप ही बिचारि देख,
पाप जाय सबको गुनीके पाले परैगी।
पूतना पिसाचिनी ज्यौं कपिकान्ह तुलसीकी,
बाँहपीर महाबीर, तेरे मारे मरैगी॥ २५॥

भावार्थ—कर्मरूपी दुष्ट राजा कंस के भरोसे बकासुर की बहन पूतना राक्षसी किसी से क्यों डरेगी। बालकों को मारने में वह बहुत क्रूर है। वह अपने छल से अबोध बालकों को छलेगी। आप ही विचार करें वह सुन्दर रूप धर कर आयी है। यह पाप आप ही दूर करने में सक्षम हैं।

हे महाबलि कपिराज! तुलसी की बाँह की पीड़ा पूतना पिशाचिनी के समान है और आप बालकृष्ण रूप हैं, उसे आप ही मार सकते हैं॥ २५॥

भालकी कि कालकी कि रोषकी त्रिदोषकी है,
बेदन बिषम पाप-ताप छलछाँहकी।
करमन कूटकी कि जंत्रमंत्र बूटकी,
पराहि जाहि पापिनी मलीन मनमाँहकी॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पैहहि सजाय, नत कहत बजाय तोहि,
बावरी न होहि बानि जानि कपिनाँहकी।
आन हनुमानकी दोहाई बलवान्‌की,
सपथ महाबीरकी जो रहै पीर बाँहकी॥ २६॥

भावार्थ—यह असह्य पीड़ा नियति का क्या लेख है? या समय, क्रोध या त्रिदोष अथवा मेरे भयंकर पापों का दुस्परिणाम। दुःख या धोखे की छाया है। मरणादि प्रयोग या मंत्र-मंत्ररूपी वृक्ष का फल है। अरी! मन की मैली पापिनी पूतना! तू भाग जा। मैं डंका पीट-पीटकर कह रहा हूँ कि नाहक ही कपिराज का स्वभाव जानकर तू ढीठ मत बन। मैं महावीर बलवान् हनुमानजी, मैं आपकी सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि अब मेरे बाँह की पीड़ा नहीं रहेगी॥ २६॥

सिंहिका सँहारि बल, सुरसा सुधारि छल,
लंकिनी पछारि मारि बाटिका उजारी है।
लंक परजारि मकरी बिदारि बारबार,
जातुधान धारि धूरिधानी करि डारी है॥
तोरि जमकातरि मदोदरी कढ़ोरि आनी,
रावनकी रानी मेघनाद महँतारी है।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भीर बाँहपीरकी निपट राखी महाबीर,
कौनके सकोच तुलसीके सोच भारी है॥ २७॥

भावार्थ—हे वीर हनुमानजी! आपने सिंहीका के बल का संहार और सुरसा के छल को सुधार कर मायावी अशोक वाटिका को उजाड़ दिया। लंकापुरी को जलाकर खाक कर दिया, राक्षसों की सेना का बार-बार संहार किया। यमराज का खड्ग अर्थात् परदा फाड़कर मेघनाद की माता और रावण की पटरानी मंदोदरी को महल से बाहर निकाल लाये। हे महाबलि कपिराज! तुलसी को चिंता है कि किस संकोच में पड़कर तुलसी की बाँह की पीड़ा को छोड़े हुए हैं॥ २७॥

तेरो बालकेलि बीर सुनि सहमत धीर,
भूलत सरीरसुधि सक्र-रबि-राहुकी।
तेरी बाँह बसत बिसोक लोकपाल सब,
तेरो नाम लेत रहै आरति न काहुकी॥
साम दान भेद बिधि बेदहू लबेद सिधि,
हाथ कपिनाथहीके चोटी चोर साहुकी।
आलस अनख परिहासकै सिखावन है,
एते दिन रही पीर तुलसीके बाहुकी॥ २८॥

भावार्थ—हे महाबीर! आपके बचपन का खेल सुनकर धीरजवान भी भयभीत हो जाते हैं। इन्द्र, सूर्य, राहू तो

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अपना सुध-बुध ही खो बैठते हैं। आपके बाहुबल के भरोसे सभी लोकपाल जगत् में निर्भयता से रहते हैं। आपके नाम से सभी शोक मुक्त हो जाते हैं। साम, दाम, दण्ड, भेद, नीति वेद लबेद से सिद्ध है कि चोर-साहु की चोटी कपिनाथ के ही हाथ में रहती है। आपके दास तुलसीदास के बाँहों में इतने दिनों से पीड़ा है। क्या वह आपके आलस्य का प्रतिफल है या क्रोध, हास-परिहास या शिक्षा है॥ २८॥

टूकनिको घर-घर डोलत कँगाल बोलि,
बाल ज्यौं कृपाल नतपाल पालि पोसो है।
कीन्ही है सँभार सार अंजनीकुमार बीर,
आपनो बिसारि हैं न मेरेहू भरोसो है॥
इतनो परेखो सब भाँति समरथ आजु,
कपिराज साँची कहौं को तिलोक तोसो है।
सासति सहत दास कीजे पेखि परिहास,
चीरीको मरन खेल बालकनिको सो है॥ २९॥

भावार्थ—गरीबों के पालक हे कृपानिधान! दरिद्रता के कारण रोटी के टुकड़ों के लिये घर-घर हाथ पसारता हूं। बालक के समान आपने पाला है। हे अंजनीकुमार! आप ही मेरे रक्षक हैं अपने जन को आप मत भूलें! मुझे इसका

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पूरा विश्वास है। कपिराज! आप समर्थवान् हैं। आपके समान तीनों लोकों में कोई नहीं है। मुझे पछतावा है कि यह सेवक दुर्दशाग्रस्त है। बच्चों के खेल के समान चिड़ियों की मृत्यु हो रही है और आप तमाशा देख रहे हैं॥ २९॥

आपने ही पापतें त्रितापतें कि सापतें,
बढ़ी है बाँहबेदन कही न सहि जाति है।
औषध अनेक जंत्र-मंत्र-टोटकादि किये,
बादि भये देवता मनाये अधिकाति है॥
करतार, भरतार, हरतार, कर्म, काल,
को है जगजाल जो न मानत इताति है।
चेरो तेरो तुलसी तू मेरो कह्यो रामदूत,
ढील तेरी बीर मोहि पीरतें पिराति है॥ ३०॥

भावार्थ—मेरे ही पाप, शाप या तीनों ताप से पीड़ा बढ़ी है। अनेक औषधि, यंत्र-मन्त्र, टोटका किया। देवताओं को मनाया। पर सब व्यर्थ हो गया, पीड़ा बढ़ती ही गयी। ब्रह्मा, विष्णु, महेश और कर्म काल तथा समूह जाल कौन है जो आपकी आज्ञा को न मानता हो। हे रामदूत! तुलसी आपका दास है। आपने ही इसको अपना सेवक बनाया है। हे महावीर! आपकी इस ढील से यह पीड़ा मुझे अधिक कष्ट दे रही है॥ ३०॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दूत रामराय को, सपूत पूत बायको,
समत्थ हाथ पायको सहाय असहायको।
बाँकी बिरदावली बिदित बेद गाइयत,
रावन सो भट भयो मुठिकाके घायको॥
एते बड़े साहेब समर्थको निवाजो आज,
सीदत सुसेवक बचन मन कायको।
थोरी बाँहपीरकी बड़ी गलानि तुलसीको
कौन पाप कोप, लोप प्रगट प्रभायको॥ ३१॥

भावार्थ—आप श्रीरामचन्द्रजी के दूत हैं। पवनदेव के सुपुत्र हैं। आप निराश्रितों के सहायक हैं। आपके यश की सुन्दर कथा है। वेद आपका यशगान करते हैं। रावण जैसा त्रिलोक विजयी आपके घूँसे की चोट से घायल हो गया। आप जैसे सुयोग्य स्वामी के रहते हुए भी तन, मन और वचन से दुःख पा रहा हूँ। तुलसी को इस बाँह पीड़ा से बड़ी ग्लानि है। मेरे किस पाप का प्रतिफल है कि आपका प्रत्यक्ष प्रभाव लुप्त हो गया है॥ ३१॥

देवी देव दनुज मनुज मुनि सिद्ध नाग,
छोटे बड़े जीव जेते चेतन अचेत हैं।
पूतना पिसाची जातुधानी जातुधान बाम,
रामदूतकी रजाइ माथे मानि लेत हैं॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

घोर जंत्र मंत्र कूट कपट कुरोग जोग,
हनुमान आन सुनि छाड़त निकेत हैं॥
क्रोध कीजे कर्मको प्रबोध कीजे तुलसीको,
सोध कीजे तिनको जो दोष दुख देत हैं॥ ३२॥

भावार्थ—देवी, देवता, दैत्य, मनुष्य, मुनि, सिद्ध और नाग आदि जितने भी छोटे-बड़े जड़-चेतन-जीव हैं तथा पूतना, पिशाचिनी, राक्षस-राक्षसी जितने भी कुटिल दुष्टात्मा हैं। उनके लिये रामदूत पवन कुमार की आज्ञा शिरोधार्य है। भीषण यंत्र-मंत्र, धोखाधड़ी, छलबाज और दुष्ट रोगों का आक्रमण हनुमानजी का नाम सुनकर ही भाग जाते हैं। मेरे खोटे कर्म पर क्रोध कीजिये। तुलसी को शिक्षा दीजिये। जो दोष दुःख दे रहा है, उसको सुधारिये॥ ३२॥

तेरे बल बानर जिताये रन रावनसों,
तेरे घाले जातुधान भये घर-घरके।
तेरे बल रामराज किये सब सुरकाज,
सकल समाज साज साजे रघुबरके॥
तेरो गुनगान सुनि गीरबान पुलकत,
सजल बिलोचन बिरंचि हरि हरके।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तुलसी के माथे पर हाथ फेरो कीसनाथ,
देखिये न दास दुखी तोसे कनिगरके॥ ३३॥

भावार्थ—युद्ध में आपके बल के कारण वानरों को रावण पर विजय मिली और राक्षस नष्ट हो गये। आपके बल से श्रीराम ने देवताओं के सभी कार्य पूर्ण किये। आपने ही राम के समाज का सारा कार्य किया। आपके गुणों का गान सुनकर देवता रोमांचित होते हैं। ब्रह्मा, विष्णु, महेश की आंखों में हर्ष का जल भर जाता है। हे वानरों के स्वामी! तुलसी के माथे पर हाथ फेरिये। आप जैसे मर्यादा की लाज रखने वालों के दास कभी दु:खी नहीं देखे गये॥ ३३॥

पालो तेरे टूकको परेहू चूक मूकिये न,
कूर कौड़ी दूको हौं आपनी ओर हेरिये।
भोरानाथ भोरेही सरोप होत थोरे दोष,
पोषि तोषि थापि आपनो न अवडेरिये॥
अंबु तू हौं अंबुचर, अंब तू हौं डिंभ, सो न,
बूझिये बिलंब अवलंब मेरे तेरिये।
बालक बिकल जानि पाहि प्रेम पहिचानि,
तुलसीकी बाँह पर लामी लूम फेरिये॥ ३४॥

भावार्थ—आपके टुकड़ों पर पला हूँ, चूक होने पर मौन मत होइये। मैं दो कौड़ी का कुमार्गी हूँ। पर आप अपनी

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ओर देखिये। हे भोलेनाथ! अपने भोलेपन से ही आप रुष्ट हो जाते हैं। संतुष्ट होकर मुझे बसायें। आपका सेवक हूँ। दुर्दशा न करें। आप जल हैं तो मैं मछली हूँ। आप माता हैं तो मैं छोटा बालक हूँ। देर न करें। मुझे आप ही का सहारा है। बच्चे को व्याकुल जानकर प्रेम की पहचान कर रक्षा करें। तुलसी की बाँह पर अपना पूँछ फेर दें, जिससे पीड़ा निर्मूल हो जाये॥ ३४॥

धेरि लियो रोगनि कुजोगनि कुलोगनि ज्यौं,
बासर जलद घन घटा धुकि धाई है।
बरसत बारि पीर जारिये जवासे जस,
रोष बिनु दोष, धूम-मूल मलिनाई है॥
करुनानिधान हनुमान महाबलवान,
हेरि हँसि हाँकि फूँकि फौजैं तैं उड़ाई है।
खाये हुतो तुलसी कुरोग राढ़ राकसनि,
केसरीकिसोर राखे बीर बरिआई है॥ ३५॥

भावार्थ—बुरे योगों, रोगों और दुर्योगों ने मुझे इस प्रकार घेर लिया है, जैसे दिन में काले बादलों का घना समूह आकाश में उमड़ता घुमड़ता है। इन्होंने क्रोध से पीड़ा रूपी जल बरसाकर निरपराध यशरूपी जवासे की अग्नि की तरह झुलसा कर मुझे मूर्च्छित कर दिया है। हे दयानिधान

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

महाबलवान् हनुमानजी! आप हँसकर निहारिये और अपनी फूंक से विपक्षी की सेना को उड़ा दीजिये। हे केशरीकिशोर वीर हनुमान! तुलसी को कुरोग रूपी निर्दयी राक्षस ने खा लिया है। अपने तेजबल से मेरी रक्षा की है॥ ३५॥

सवैया

रामगुलाम तुही हनुमान
गोसाँइ सुसाँइ सदा अनुकूलो।
पाल्यो हौं बाल ज्यों आखर दू
पितु मातु सों मंगल मोद समूलो॥
बाँहकी बेदन बाँहपगार
पुकारत आरत आनँद भूलो।
श्रीरघुबीर निवारिये पीर
रहौं दरबार परो लटि लूलो॥ ३६॥

भावार्थ—हे गोस्वामी हनुमानजी, आप मेरे श्रेष्ठ स्वामी हैं। आप सदैव ही श्रीरामचन्द्रजी के सेवकों के पक्ष में रहने वाले हैं। आनन्द मंगल के मूल दोनों अक्षरों से माता-पिता के समान मेरी सदैव रक्षा किये हैं। हे बाहुपगार! मैं बाहु की पीड़ा से बहुत दु:खी होकर आपको पुकार रहा हूँ। हे रघुकुल के वीर! मेरी पीड़ा को दूर कीजिये, जिससे दुर्बल एवं निर्बल होकर आपके दरबार में पड़ा रहूँ॥ ३६॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

घनाक्षरी

कालकी करालता करम कठिनाई कीधौं,
पापके प्रभावकी सुभाय बाय बावरे।
बेदन कुभाँति सो सही न जाति राति दिन,
सोई बाँह गही जो गही समीरडावरे॥
लायो तरु तुलसी तिहारो सो निहारि बारि,
सींचिये मलीन भो तयो है तिहूँ तावरे।
भूतनिकी आपनी परायेकी कृपानिधान,
जानियत सबहीकी रीति राम रावरे॥ ३७॥

भावार्थ—न जाने काल की कुदृष्टि है या मेरे कुकर्मों का कुफल है। पाप का प्रभाव है या वात की उन्मत्तता है। रातों-दिन मुझे असह्य पीड़ा हो रही है। ...और यह पीड़ा उसी बांह को पकड़े हुए हैं जिसे पवनकुमार ने थामा था। तुलसी रूपी वृक्ष को आपने ही लगाया था। यह तीनों तापों की ज्वाला से झुलसकर मुरझा गया है। इसे अपने कृपारूपी जल से सींच दें। हे दया-निधान, आप भूतकाल, वर्तमान काल और भविष्यकाल के सभी अपने और पराये की सारी बातें तथा विधि व रीति जानते हैं॥ ३७॥

पायँपीर पेटपीर बाँहपीर मुहपीर,
जरजर सकल सरीर पीरमई है।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

देव भूत पितर करम खल काल ग्रह,
मोहिपर दवरि दमानक सी दई है॥
हौं तो बिन मोलके बिकानो बलि बारेही तें,
ओट रामनामकी ललाट लिखि लई है।
कुंभजके किंकर बिकल बूड़े गोखुरनि,
हाय रामराय ऐसी हाल कहूँ भई है॥ ३८॥

भावार्थ—पाँव की पीड़ा, पेट की पीड़ा, बाहु की पीड़ा और मुख की पीड़ा यानि की मेरा सारा शरीर पीड़ामय होकर जीर्ण-शीर्ण हो गया है। देवता, प्रेत, पितर, कर्म, काल और दुष्ट ग्रह सब मुझ पर प्रहार कर रहे हैं। मेरे ऊपर आपकी सदैव बलिहारी है। मैंने अपने मस्तक पर राम नाम का आधार लिख लिया है। अरे सर्वशक्तिमान् राजा रामचन्द्र जी, कहीं ऐसा भी हुआ है कि अगस्त्य मुनि का सेवक भी गाय के खुर में डूब गया हो॥ ३८॥

बाहुक-सुबाहु नीच लीचर-मरीच मिलि,
मुँहपीर-केतुजा कुरोग जातुधान हैं।
रामनाम जपजाग कियो चहों सानुराग,
काल कैसे दूत भूत कहा मेरे मान हैं॥
सुमिरे सहाय रामलखन आखर दोऊ,
जिनके समूह साके जागत जहान हैं।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तुलसी सँभारि ताड़का-सँहारि भारी भट,
बेधे बरगदसे बनाइ बानवान हैं॥ ३९॥

भावार्थ—बाँह की पीड़ा रूपी नीच सुबाहु और देह के विकार स्वरूप मारीच, राक्षस और ताड़कारूपिणी मुख की पीड़ा एवं अन्य बुरे रोग राक्षसों से मिले हुए हैं। मैं राम-नाम का यज्ञ करना चाहता हूँ। पर कालदूत के समान ये दुष्टात्मा मेरे वश में नहीं हैं। संसार में जिनके नाम का यश फैल रहा है। वे (रा और म = राम) दोनों अक्षर स्मरण करने पर मेरी रक्षा करेंगे। हे तुलसी! तू ताड़का का वध करने वाले महायोद्धा हनुमान का स्मरण कर, वह उसे अपने बाणों का निशाना बनाकर बड़ के फल के समान उसका भेदन कर देंगे॥ ३९॥

बालपने सूधे मन राम सनमुख भयो,
रामनाम लेत माँगि खात टूकटाक हौं।
पर्‌यो लोकरीतिमें पुनीत प्रीति रामराय,
मोहबस बैठो तोरि तरकितराक हौं॥
खोटे-खोटे आचरन आचरत अपनायो,
अंजनीकुमार सोध्यो रामपानि पाक हौं।
तुलसी गोसाइँ भयो भोंड़े दिन भूलि गयो,
ताको फल पावत निदान परिपाक हौं॥ ४०॥

भावार्थ—मैं बाल्यावस्था में ही निश्छल व निर्मल मन से श्रीरामचंद्रजी के सम्मुख उपस्थित हुआ। रामनाम के

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सहारे मांग-मांग कर खाता-पीता था। फिर युवावस्था आने पर लोक रीति के चक्कर में पड़कर चटपट श्रीराम के चरणों की प्रीति को तोड़ खोटे आचरण अपना बैठा। उस समय मुझे अंजनि कुमार ने अपनाया और रामचन्द्रजी के पवित्र हाथों से मेरा सुधार करवाया। तुलसी, गुसांई हो गया। पिछले बुरे दिन भुला दिया। उसी का अच्छा फल पा रहा हूँ॥ ४०॥

असन-बसन-हीन विषम-विषाद-लीन,
देखि दीन दूबरो करै न हाय हाय को।
तुलसी अनाथसो सनाथ रघुनाथ कियो,
दियो फल सीलसिंधु आपने सुभायको॥
नीच यहि बीच पति पाइ भरुहाइबो,
बिहाइ प्रभु-भजन बचन मन कायको।
तातें तनु पेषियत घोर बरतोर मिस,
फूटि-फूटि निकसत लोन रामरायको॥ ४१॥

भावार्थ—मैं भोजन-वस्त्र रहित भयंकर विषाद में डूबा हुआ था। दीन दुर्बल जानकर सभी उपेक्षा करते थे। ऐसे तुलसी को दया के सागर रघुनाथजी ने अपनाया। इस बीच प्रतिष्ठा पाकर मेरा जैसा नीच मनुष्य अहंकार से फूल उठा और तन-मन-वचन से राम नाम छोड़ दिया। इसी से मेरे

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शरीर से बरतोड़ बनकर रामचंद्र जी का नमक फूट-फूटकर निकल रहा है॥ ४१॥

जिओं जग जानकीजीवनको कहाइ जन,
मरिबेको बारानसी बारि सुरसारिको।
तुलसीके दुहूँ हाथ मोदक है ऐसे ठाऊँ,
जाके जिये मुये सोच करिहैं न लरिको॥

मोको झूठो साँचो लोग रामको कहत सब,
मेरे मन मान है न हरको न हरिको।
भारी पीर दुसह सरीरतें बिहाल होत,
सोऊ रघुबीर बिनु सकै दूर करि को॥ ४२॥

भावार्थ—आदिशक्ति स्वरूपा जानकी जी के श्रीनाथ श्रीरामचन्द्रजी का मैं दास बनकर संसार में जीवित हूँ। मेरे मृत्यु के लिये काशी तथा गंगाजल है ही। ऐसे स्थान पर जीवन-मरण के लिये तुलसी के दोनों हाथों में लड्डू हैं। मेरे मरने से शोक भी कोई नहीं करेगा। सब लोग मुझको झूठा-सच्चा राम का दास ही कहते हैं। मुझे गर्व है कि मैं राम का भक्त हूँ। शरीर के असह्य पीड़ा से विकल हो रहा हूँ। उसको रघुनाथजी के अलावा कोई दूर नहीं कर सकता॥ ४२॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सीतापति साहेब सहाय हनुमान नित,
हित उपदेसको महेस मानो गुरुकै।
मानस बचन काय सरन तिहारे पाँय,
तुम्हरे भरोसे सुर मैं न जाने सुरकै॥
व्याधि भूतजनित उपाधि काहू खलकी,
समाधि कीजे तुलसीको जानि जन फुरकै।
कपिनाथ रघुनाथ भोलानाथ भूतनाथ,
रोगसिंधु क्यों न डारियत गाय खुरकै॥ ४३॥

भावार्थ—हे हनुमानजी! सीतापति भगवान् श्रीराम सदैव ही आपके सहायक हैं। आपको हित उपदेश देने के लिये महेश जी गुरु तुल्य रूप में सदैव ही तत्पर रहते हैं। मेरे तन, मन, वचन को सिर्फ आपके श्रीचरणों का ही सहारा है। फलतः आपके कारण मैंने कभी भी किसी भी देवता को देव समान नहीं माना। क्योंकि आप सर्व-सामर्थ्यवान हैं। तुलसी को अपना सच्चा सेवक जानकर रोग या प्रेत द्वारा उत्पन्न इस पीड़ा को शांत कीजिये।

हे कपिनाथ, रघुनाथ, भोलानाथ और भूतनाथ रोग रूपी इस दुखद सागर को गाय के खुर के आकार के समान संकुचित करने की कृपा करें॥ ४३॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कहौं हनुमानसों सुजान रामरायसों,
कृपानिधान संकरसों सावधान सुनिये।
हरष विषाद राग रोष गुन दोषमई,
बिरची बिरंचि सब देखियत दुनिये॥
माया जीव कालके करमके सुभायके,
करैया राम बेद कहैं साँची मन गुनिये।
तुम्हतें कहा न होय हाहा सो बुझैये मोहि,
हौं हूँ रहों मौन ही बयो सो जानि लुनिये॥ ४४॥

भावार्थ—मैं, हनुमानजी से, सुजान राजा रामजी से और कृपानिधान शंकरजी से विनती कर रहा हूँ कि मेरी याचना को एकाग्र होकर सुने। सभी देखते हैं कि विधाता ने दुनिया को हर्ष, विषाद, राग, रोष, गुण और दोषमय बनाया है।

भगवान् श्रीरामचन्द्रजी माया, जीव, काल, कर्म और स्वभाव देने वाले हैं। मैंने अपने अनुभूतियों से इन बातों को सत्य पाकर इसे माना है। कृपया आप मुझे यह समझा दें कि आपसे क्या नहीं हो सकता है। फिर भी मैं यह जान कर मौन रहूँगा कि जो मैंने बोया है, वही काट रहा हूँ॥ ४४॥

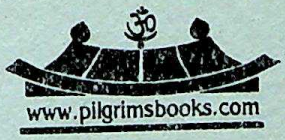
॥ इति शुभम्॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पिलग्रिम्स पब्लिशिंग से प्रकाशित
हिन्दी की अन्य पुस्तकें

- धम्मपद ..... चन्द्रमणि भिक्खु
- ब्रह्मचर्य ..... महात्मा गांधी
- अहिंसा ..... महात्मा गांधी
- गीतगोविंदानंद ..... जयदेव
- हिन्दू तीर्थ ..... द्वारिका प्रसाद शर्मा
- काशी मोक्षविवेक ..... मथुरा मोहन मुखोपाध्याय
- काशीपूजन यात्रा ..... पं० नारायणपति शर्मा



पुस्तक सूची एवं अन्य जानकारियों के लिये
इस पते पर ई-मेल या फैक्स से सम्पर्क करें :

PILGRIMS BOOK HOUSE
Mail Order, P. O. Box 3872, Kathmandu, Nepal
Tel : 977-1-4700942 Fax: 977-1-4700943
E-mail: mailorder@pilgrims.wlink.com.np

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

संत शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदासजी परमेश्वर श्रीराम के एकनिष्ठ भक्त थे। वे भक्ति मार्ग में दास-भाव को सर्वोत्कृष्ट मानते थे। फलतः श्रीराम के दास हनुमानजी से ही वे याचना प्रार्थना किया करते थे।

वि० सं० १६६४ में उनके हाथों में वात-व्याधि की असह्य पीड़ा उत्पन्न हुई तो वे रामभक्त हनुमान के श्रीचरणों का स्मरण करते हुए सरल शब्दों में हनुमान बाहुक की रचना कर पूरी आस्था से जप करते हुए वात-व्याधि की पीड़ा से मुक्त हुए।

वर्तमान वैज्ञानिक युग में भी "श्रीहनुमानबाहुक" में उद्धृत मंत्रों में वह अदृश्य शक्ति निहित है, जिसके जप से वात-व्याधि की पीड़ा सदैव के लिये दूर हो जाती है।

आप भी इसका अनुसरण करें।

PILGRIMS PUBLISHING
◆ Varanasi ◆
www.pilgrimsbooks.com
Hinduism
Rs. 25/- IC

ISBN 81-7769-350-6
9 788177 693508

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh